

**श्री गोरखनाथ पाण्डेय (भद्रोही)**: माननीय सभापति महोदया, मैं आपके माध्यम से माननीय पर्यटन मंत्री महोदया का ध्यान उत्तर प्रदेश के सीता समाहित स्थल की ओर आकर्षित करना चाहूँगा। यह स्थल सीतामढ़ी जनपद भद्रोही में है। पौराणिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। एक तरफ काशी और दूसरी तरफ प्रयाग है और उसके बीच में सीता समाहित स्थल है। उसी से सटा हुआ देश की सिद्धपीठ के रूप में जाना जाता विंध्याचल है। इन स्थानों, काशी, प्रयाग, सीतामढ़ी और विंध्याचल को यदि एक परिपथ के रूप में बनाया जाता है, तो वहां पर्यटन को बहुत बढ़ावा दिया जा सकता है। वहां हजारों-हजार विदेशी पर्यटक प्रति वर्ष आते हैं। देश के कोने-कोने से प्रति दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। सीता समाहित स्थल, देश की धरोहर है। वाल्मीकि आश्रम भी वही था। लव-कुश की जन्मस्थली भी वही है और वहीं सीता जी समाहित हुई थीं, ऐसी पौराणिकता भी है।

महोदया, गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामायण में कवितावली में लिखा है "दिग्पुर बारीगपुर बिच विलसत भूम" वह स्थान पौराणिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। वह स्थल ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पौराणिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। जब से उत्तर प्रदेश से उत्तरांचल अलग हुआ है, तब से हमारे इन पर्यटक केन्द्रों में कहीं-कहीं कमी आई है। मैं आपके माध्यम से मंत्री जी का ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा कि सीता समाहित स्थल को पर्यटक स्थल घोषित करें और उसके लिए एक परिपथ, यानी कॉरीडोर बनाएं। जो काशी, प्रयाग, विंध्याचल और सीतामढ़ी को ग्रुप में जोड़े, ताकि वहां जो देशी और विदेशी पर्यटक आते हैं, उन्हें भी लाभ मिले और विदेशी मुद्रा अर्जित हो और उस क्षेत्र का विकास हो।

महोदया, भद्रोही जनपद में वह एक ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पौराणिक स्थल है। उसका भी विकास होगा। मैं आपके माध्यम से भारत सरकार के पर्यटन मंत्री से उसे पर्यटक स्थल घोषित करने की मांग करता हूँ।